Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2187–2194

IMPACT OF FAMILY ECONOMIC BACKGROUND ON THE EDUCATIONAL ACHIEVEMENT OF SCHEDULED TRIBE STUDENTS IN CHHINDWARA DISTRICT: A SOCIO-ECONOMIC ANALYSIS

छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक आर्थिक परिवेश का प्रभाव: एक सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण

Priti Jawre [1], Prakriti Chaturvedi [2]

[1] Research Scholar, Department of Education, Rabindranath Tagore University, Bhopal, India
[2] Research Director, Department of Education, Rabindranath Tagore University, Bhopal, India

ABSTRACT

English: This research study analytically examines the educational achievements of Scheduled Tribe (ST) students residing in Chhindwara district of Madhya Pradesh in their socio-economic perspective. Using a quantitative methodology based on direct data from a total of 200 students, this research examines the interrelationship between factors such as family income, educational background of parents and access to educational resources and the academic performance of students. The study revealed that while about 55% of the students are scoring above average marks, the remaining 45% are below average due to economic poverty and lack of access to basic learning resources. Parental education plays a positive and motivating role in the educational progress of students, while limited digital access and unsuitable learning environment are proving to be a hindrance to their proper development. The study concludes by recommending targeted interventions such as financial assistance, availability of resources, and educational counseling for the educational advancement of Scheduled Tribe students.

Hindi: यह शोध अध्ययन मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जनपद में निवासरत अनुसूचित जनजातीय (ST) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का उनके सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक परीक्षण करता है। कुल 200 छात्रों के प्रत्यक्ष आँकड़ों पर आधारित मात्रात्मक पद्धति के माध्यम से यह अनुसंधान पारिवारिक आय, अभिभावकों की शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षणिक संसाधनों की सुलभता जैसे कारकों और विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पादन के मध्य पारस्परिक संबंधों की पड़ताल करता है। अध्ययन से यह तथ्य उद्घाटित हुआ कि जहाँ लगभग 55% विद्यार्थी औसत से अधिक अंक प्राप्त कर रहे हैं, वहीं शेष 45% विद्यार्थी आर्थिक विपन्नता एवं बुनियादी अधिगम संसाधनों की अनुपलब्धता के कारण औसत से निम्न स्तर पर स्थित हैं। अभिभावकों की शिक्षा विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति में सकारात्मक एवं प्रेरक भूमिका निभाती है, जबकि सीमित डिजिटल पहुंच एवं अनुपयुक्त अध्ययन वातावरण इनके समुचित विकास में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। अध्ययन के अंत में अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उन्नति हेतु लक्षित हस्तक्षेप जैसे वित्तीय सहायता, संसाधनों की उपलब्धता, एवं शैक्षिक परामर्श की अनुशंसा की गई है।

Corresponding Author
Priti Jawre
, deepikahrd1234@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5360

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

Keywords: Scheduled Tribes, Educational Achievement, Socio-Economic Status, Family Income, Family Income, Educational Resources, Digital Divide, Digital Divide and Rural Education अनुसूचित जनजातीय, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक आय, माता-पिता की शिक्षा, शैक्षणिक संसाधन, डिजिटल विभाजन, और ग्रामीण शिक्षा

1. प्रस्तावना

भारत एक विशाल और विविधताओं से परिपूर्ण देश है जहाँ अनेक जातियाँ, जनजातियाँ, भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ सह-अस्तित्व में हैं। इसी विविधता के कारण यहाँ की सामाजिक संरचना बहुआयामी और जटिल है। भारतीय संविधान ने समाज के कमजोर और पिछड़े वर्गों के कल्याण हेतु विशेष प्रावधान किए हैं, जिनमें अनुसूचित जनजातियाँ एक प्रमुख वर्ग के रूप में सम्मिलित हैं। अनुसूचित जनजातियाँ वे समुदाय हैं जो पारंपरिक रूप से मुख्यधारा की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक प्रक्रियाओं से अलग-थलग रहे हैं और जिनके उत्थान के लिए राज्य को विशेष उत्तरदायित्व दिया गया है। शिक्षा इन समुदायों को सामाजिक-सांस्कृतिक समावेशन और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने का सबसे प्रभावशाली साधन है।

छिंदवाड़ा जिला, जो मध्यप्रदेश राज्य का एक महत्वपूर्ण जनजातीय बहुल क्षेत्र है, अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या, सांस्कृतिक विरासत और परंपरागत जीवनशैली के कारण अनुसंधान हेतु अत्यंत उपयुक्त क्षेत्र है। इस जिले में गोंड, बैगा, भील, कोरकू, और अन्य कई जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनकी जीवन शैली प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। पारंपरिक कृषि, वनोपज संग्रह, पशुपालन और कुटीर उद्योग इनके जीवन के मूल आधार हैं। परंतु, आधुनिक समय में बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश ने इन जनजातियों को भी प्रभावित किया है। शिक्षा की पहुँच, अवसरों की उपलब्धता और जागरूकता के अभाव ने इनके विकास को सीमित कर दिया है।

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। यह केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि चेतना, जागरूकता, आत्मबल और सामाजिक न्याय की आधारशिला है। अनुसूचित जनजातियों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करने हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि उनके पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक परिवेश को गहराई से समझा जाए। विशेषकर, पारिवारिक आर्थिक परिवेश जैसे – मासिक आय, माता-पिता की शिक्षा, संसाधनों की उपलब्धता, अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण, और बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति – इन सभी का विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

पारिवारिक आर्थिक परिवेश वह आधार होता है जिस पर विद्यार्थी की संज्ञानात्मक, मानसिक, और सामाजिक क्षमताएँ विकसित होती हैं। एक आर्थिक रूप से सक्षम परिवार अपने बच्चों को उत्तम शिक्षा, उपयुक्त अध्ययन सामग्री, अनुकूल वातावरण, तकनीकी सुविधाएँ तथा मानसिक संबल प्रदान करता है। इसके विपरीत, आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों में इन सभी सुविधाओं का अभाव होता है, जिससे विद्यार्थी की शिक्षा प्रभावित होती है।

अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं जैसे – सामाजिक दूरी, भौगोलिक दुर्गमता, अभिभावकों की निरक्षरता, आर्थिक संसाधनों की कमी, तथा सरकारी योजनाओं की अपर्याप्त पहुँच। छिंदवाड़ा जैसे जिले में, जहाँ अनेक गाँव दूरस्थ एवं वनों के समीप स्थित हैं, वहाँ स्कूलों तक पहुँच कठिन होती है, परिवहन के साधनों की कमी होती है, और अधिकांश परिवार दैनिक मजदूरी या कृषि पर निर्भर रहते हैं। इन परिस्थितियों में बच्चों की निरंतर उपस्थिति और पाठ्यक्रम की समझ चुनौतीपूर्ण बन जाती है।

छिंदवाड़ा जिले के जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण धीरे-धीरे परिवर्तित हो रहा है। सरकारी और गैर-सरकारी प्रयासों से प्राथमिक शिक्षा की पहुँच में वृद्धि हुई है, किंतु माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा में अभी भी भारी गिरावट देखी जाती है। अधिकतर जनजातीय विद्यार्थियों की पढ़ाई आर्थिक कारणों से बीच में ही छूट जाती है। अनेक बार माता-पिता बच्चों को पारिवारिक कार्यों में सहायता के लिए विद्यालय भेजने में असमर्थ रहते हैं। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को पारिवारिक आर्थिक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में समझा जाए।

इस शोध का उद्देश्य केवल आंकड़ों का विश्लेषण करना नहीं है, बल्कि सामाजिक यथार्थ को उजागर करना है। यह अध्ययन एक सामाजिक-आर्थिक विमर्श प्रस्तुत करता है, जो यह बताता है कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रम और विद्यालय तक सीमित नहीं है, अपितु यह सामाजिक वातावरण, पारिवारिक प्रेरणा, आर्थिक सुविधा, और व्यक्तिगत आकांक्षाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई है। अनुसूचित जनजातीय समुदायों में शैक्षिक असमानता का समाधान तभी संभव है जब हम शिक्षा को एक समग्र सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखें और उसमें निहित विविध सामाजिक-आर्थिक कारकों को सम्मिलित करें।

छिंदवाड़ा जिले में जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले आर्थिक तत्वों में पारिवारिक आय सबसे प्रमुख है। कम आय वाले परिवार अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में पढ़ाने या ट्यूशन दिलवाने में असमर्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त, घर में अध्ययन हेतु शांत वातावरण, पर्याप्त स्थान, बिजली, इंटरनेट, पुस्तकालय सामग्री, डेस्क-कुर्सी जैसे भौतिक संसाधनों का अभाव भी विद्यार्थियों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी पारिवारिक आर्थिक स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ता है, जो उनकी उपस्थिति, एकाग्रता और प्रदर्शन में परिलक्षित होता है।

माता-पिता की शिक्षा और जागरूकता भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है। शिक्षित अभिभावक न केवल बच्चों की पढ़ाई में रुचि लेते हैं, बल्कि उन्हें प्रेरित करने, मार्गदर्शन देने तथा विद्यालयी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके विपरीत, अशिक्षित अभिभावकों के लिए विद्यालय की प्रक्रिया, पाठ्यक्रम की जटिलता, तथा बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझना कठिन होता है। यह स्थिति विद्यार्थियों को उपेक्षा, असमर्थन और असहायता की स्थिति में डाल सकती है।

भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातियों के लिए अनेक शैक्षिक योजनाएँ और छात्रवृत्तियाँ संचालित की जाती हैं, जैसे – एकलव्य विद्यालय, छात्रावास सुविधा, निशुल्क पाठ्यपुस्तकें, मध्याह्न भोजन योजना, साइकिल वितरण योजना इत्यादि। परंतु इन योजनाओं का प्रभाव तभी सार्थक होगा

जब इनकी सही समय पर और पारदर्शी क्रियान्वयन की सुनिश्चितता हो। वर्तमान समय में अनेक योजनाएँ कागज़ी कार्यवाही तक सीमित रह जाती हैं या भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही का शिकार हो जाती हैं।

शैक्षिक समानता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम केवल विद्यालयों के निर्माण या पाठ्यक्रम की योजना तक सीमित न रहें, बल्कि शिक्षा के सामाजिक संदर्भों को भी समान रूप से महत्त्व दें। अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार हेतु उनके पारिवारिक आर्थिक परिवेश को मजबूत करना अनिवार्य है। इसके लिए बहुस्तरीय प्रयासों की आवश्यकता है – जैसे ग्राम पंचायत स्तर पर शैक्षिक जागरूकता अभियान, महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से मातृ-शिक्षा, ग्राम स्तरीय पुस्तकालयों की स्थापना, डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण, तथा सामुदायिक शिक्षा केंद्रों की स्थापना।

यह शोध विशेष रूप से इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया गया है कि छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का उनके पारिवारिक आर्थिक परिवेश के साथ सुस्पष्ट संबंध स्थापित किया जा सके, जिससे नीति निर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवी संगठनों को दिशा मिल सके। यह अध्ययन न केवल एक शैक्षिक दस्तावेज है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा भी है, जो उन विद्यार्थियों के जीवन में आशा का संचार कर सकती है जो आज भी अनेक अभावों के बावजूद शिक्षार्जन हेतु प्रयासरत हैं।

यह स्पष्ट है कि छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक है कि पारिवारिक आर्थिक परिवेश को समझते हुए, उस पर लक्षित नीति निर्माण किया जाए। जब तक हम शिक्षा को केवल संस्थागत प्रक्रिया मानते रहेंगे और समाज-परिवार की भूमिका को उपेक्षित करेंगे, तब तक शिक्षा की वास्तविक सार्वभौमिकता और समावेशिता का सपना अधूरा रहेगा। यह शोध इसी दिशा में एक गंभीर और तर्कसंगत प्रयास है।

2. उद्देश्य

1) अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर जानना।
2) अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों के पारिवारिक आय स्तर का विश्लेषण करना।
3) पारिवारिक आर्थिक संसाधनों (जैसे घर, बिजली, पढ़ाई की सामग्री आदि) की उपलब्धता का अध्ययन करना।
4) शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता की शैक्षणिक योग्यता के प्रभाव का विश्लेषण करना।
5) अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और पारिवारिक आर्थिक परिवेश के मध्य संबंध का परीक्षण करना।

3. शोध पद्धति

- नमूना (Sample): 200 अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थी (कक्षा 9 से 12 तक)
- क्षेत्र: छिंदवाड़ा जिले के विभिन्न ब्लॉक (जैसे हर्रई, तामिया, पांढुर्ना आदि)
- सांख्यिकीय तकनीक: प्रतिशत, माध्य, सहसंबंध
- डेटा संग्रह: प्रश्नावली एवं शैक्षणिक रिपोर्ट कार्ड

4. डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर ।

श्रेणी	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)
80% से अधिक	28	14%
60% - 79%	82	41%
40% - 59%	64	32%
40% से कम	26	13%
कुल योग	200	100%

व्याख्या

उपरोक्त तालिका अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को चार प्रमुख ग्रेड श्रेणियों में विभाजित कर उनकी संख्या एवं प्रतिशत का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। कुल 200 विद्यार्थियों के आधार पर यह वितरण सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक परिस्थितियों को समझने में सहायक है।इस श्रेणी में केवल 28 विद्यार्थी (14%) आते हैं, जो अपेक्षाकृत उच्च उपलब्धि दर्शाते हैं। यह संकेत करता है कि इस समूह के विद्यार्थियों को बेहतर संसाधनों, सकारात्मक पारिवारिक समर्थन और अनुकूल सामाजिक परिवेश की सुविधा प्राप्त हुई होगी। जनजातीय समुदाय में ऐसी स्थिति दुर्लभ है, इसलिए यह प्रतिशत दर्शाता है कि कुछ विद्यार्थी पारंपरिक बाधाओं को पार कर प्रगति की ओर अग्रसर हैं। यह भी स्पष्ट करता है कि यदि समुचित अवसर उपलब्ध हों, तो अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थी भी शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।यह वर्ग सर्वाधिक संख्या (82 विद्यार्थी – 41%) को समाहित करता है, जो बताता है कि अधिकांश विद्यार्थी औसत से ऊपर प्रदर्शन कर रहे हैं। यह वर्ग नीतिगत रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि थोड़े अतिरिक्त सहयोग और सुविधाओं से इनकी उपलब्धि को 'उच्च श्रेणी' में परिवर्तित किया जा सकता है। इस श्रेणी के विद्यार्थी संभावनाशील माने जाते हैं, जो उचित मार्गदर्शन, छात्रवृत्ति योजनाएँ, ट्यूटर सहायता और संसाधनों के माध्यम से उत्कृष्टता की ओर बढ़ सकते हैं।इस श्रेणी में 64 विद्यार्थी (32%) शामिल हैं। यह वर्ग अपेक्षाकृत कमजोर बौद्धिक उपलब्धि का सूचक है। इसकी पृष्ठभूमि में अनेक कारण हो सकते हैं जैसे – पारिवारिक आर्थिक संकट, माता-पिता की शैक्षिक अज्ञानता, विद्यालय तक पहुँच की कठिनाई, या अध्ययन सामग्री का अभाव। यह वर्ग "अधर में लटके" विद्यार्थियों का है – न तो वे पूर्णत: विफल हैं, न ही सफल। यदि इन्हें समय पर सहारा न मिले, तो यह समूह शैक्षिक रूप से पिछड़ सकता है।26 विद्यार्थी (13%) इस वर्ग में आते हैं, जो न्यूनतम स्तर से भी नीचे प्रदर्शन कर रहे हैं। यह संकेत करता है कि इन विद्यार्थियों को गंभीर चुनौतियों का सामना है – जैसे विद्यालयीय ड्रॉपआउट की संभावना, शिक्षकों की अनुपलब्धता, घरेलू उत्तरदायित्व, या भाषाई/सांस्कृतिक अवरोध। यह वर्ग विशेष हस्तक्षेप की माँग करता है, जैसे रेमेडियल कक्षाएँ, व्यक्तिगत परामर्श, विशेष छात्रवृत्तियाँ तथा पोषण/स्वास्थ्य सहायता।तालिका के अनुसार, कुल 55% विद्यार्थी औसत से ऊपर (60% से अधिक) ग्रेड प्राप्त कर रहे हैं, जबकि 45% विद्यार्थी औसत या उससे नीचे हैं। यह दर्शाता है कि अनुसूचित जनजातीय समुदाय में शैक्षिक परिवर्तन की लहर प्रारंभ हो चुकी है, किंतु इसकी गति को तेज करने हेतु लक्षित शैक्षिक नीति, वित्तीय सहायता, और समाजिक जागरूकता की आवश्यकता है। विशेषकर मध्य श्रेणी और न्यून ग्रेड वाले विद्यार्थियों के लिए त्वरित शैक्षिक हस्तक्षेप आवश्यक है।

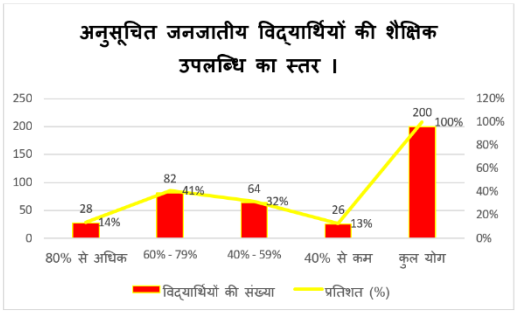

तालिका 2: अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों के पारिवारिक आय स्तर का विश्लेषण ।

मासिक आय श्रेणी (₹)	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)
₹2000 से कम	38	19%
₹2001 - ₹5000	90	45%
₹5001 - ₹10000	50	25%
₹10001 से अधिक	22	11%

व्याख्या

उपरोक्त तालिका छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों के पारिवारिक मासिक आय के वितरण को चार आय श्रेणियों में दर्शाती है। यह तालिका न केवल उनके आर्थिक संसाधनों की स्थिति को स्पष्ट करती है, बल्कि यह भी इंगित करती है कि पारिवारिक आर्थिक परिवेश किस हद तक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकता है। ₹2000 से कम मासिक आय – 19%इस वर्ग में 38 विद्यार्थी आते हैं जो अत्यंत गरीब पारिवारिक पृष्ठभूमि से हैं। यह वर्ग अत्यधिक वंचनाग्रस्त माना जाता है जहाँ शिक्षा से अधिक प्राथमिकता आजीविका, भोजन, और जीविका संबंधी समस्याओं को दी जाती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों के लिए स्कूल जाना ही चुनौतीपूर्ण होता है, पुस्तकें, स्टेशनरी, वर्दी, या डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता लगभग नहीं के बराबर होती है। यह वर्ग सरकारी सहायता, छात्रवृत्ति, एवं मध्याह्न भोजन जैसी योजनाओं पर अत्यधिक निर्भर रहता है। ₹2001 - ₹5000 मासिक आय – 45%यह वर्ग अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों का सबसे बड़ा वर्ग है (90 विद्यार्थी)। यह निम्न-मध्यम वर्गीय आर्थिक स्थिति को दर्शाता है जहाँ परिवार किसी तरह बुनियादी जरूरतें पूरी कर पा रहा है, परंतु शिक्षा की गुणवत्ता और निरंतरता अभी भी चुनौती बनी रहती है। इस वर्ग के विद्यार्थियों की पढ़ाई अकसर घरेलू कामकाज, खेतों में सहायता या छोटे-मोटे श्रम कार्यों से बाधित होती है। आर्थिक अस्थिरता के कारण स्कूल छोड़ने

की प्रवृत्ति इस वर्ग में अधिक देखी जाती है।₹5001 - ₹10000 मासिक आय – 25%इस श्रेणी में आने वाले 50 विद्यार्थियों के परिवार अपेक्षाकृत स्थिर आर्थिक स्थिति में हैं। यद्यपि यह पूरी तरह मध्य वर्ग नहीं कहा जा सकता, परन्तु इस वर्ग को "संभावनाशील समूह" की संज्ञा दी जा सकती है। इन विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत बेहतर पोषण, पढ़ाई का समय और शैक्षिक संसाधन मिल सकते हैं। यदि इन्हें लक्ष्यित सहायता, करियर काउंसलिंग, और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण मिले, तो ये विद्यार्थी शैक्षिक उत्कृष्टता तक पहुँच सकते हैं।₹10001 से अधिक मासिक आय – 11%इस श्रेणी में 22 विद्यार्थी शामिल हैं जो आर्थिक रूप से सबसे सुदृढ़ स्थिति में हैं। इनके अभिभावकों की आय अपेक्षाकृत अधिक है, जिससे ये विद्यार्थी निजी विद्यालयों, कोचिंग संस्थानों या तकनीकी संसाधनों तक पहुँच बनाने में सक्षम हो सकते हैं। यह वर्ग शिक्षा को प्राथमिकता देने में अग्रणी होता है और उच्च ग्रेड प्राप्त करने की संभावनाएँ अधिक रहती हैं।तालिका के अनुसार, कुल 64% विद्यार्थी ₹5000 या उससे कम मासिक आय वाले परिवारों से आते हैं। यह स्थिति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि अनुसूचित जनजातीय समुदाय में अभी भी आर्थिक अभाव एक बड़ी बाधा है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक निरंतरता, गुणवत्ता और परिणामों को प्रभावित करता है। नीति-निर्माताओं को ऐसे वर्गों के लिए विशेष वित्तीय सहायता, डिजिटल शिक्षा सुलभता, एवं करियर मार्गदर्शन योजनाओं पर ध्यान देना होगा।

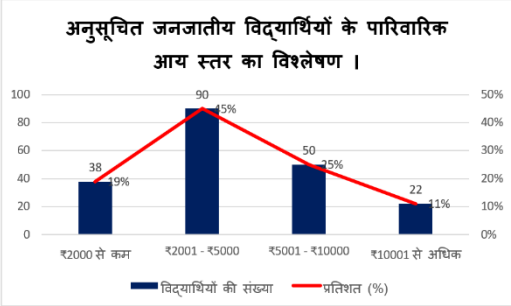

तालिका 3: पारिवारिक आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन करना।

संसाधन	उपलब्धता (%)
पक्के मकान	40
बिजली	72
पढ़ाई की मेज/कुर्सी	35
पुस्तकें	58
इंटरनेट सुविधा	22

यह तालिका छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों के पारिवारिक परिवेश में उपलब्ध शैक्षणिक संसाधनों की स्थिति को दर्शाती है। संसाधनों की यह स्थिति सीधे-सीधे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, क्योंकि भौतिक और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, अध्ययन के अवसर और गुणवत्ता को निर्धारित करती है। पक्के मकान – 40% विद्यार्थियों के पास पक्के मकान हैं, जो कि एक स्थायित्वपूर्ण और संरक्षित अध्ययन वातावरण के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। कच्चे या अस्थाई मकानों में रहने वाले विद्यार्थियों को मौसमीय प्रभाव, स्थान की तंगी और शोरगुल जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी एकाग्रता और पढ़ाई का समय प्रभावित होता है। यह स्थिति सामाजिक असमानता की गहराई को भी दर्शाती है। बिजली – 72%विद्यार्थियों के घरों में बिजली की सुविधा उपलब्ध है। बिजली शिक्षा के लिए एक मूलभूत आधार है – रात्रि अध्ययन, मोबाइल या डिजिटल डिवाइस चार्जिंग, ऑनलाइन कक्षाओं में भागीदारी, और रोशनी की गुणवत्ता सीधे विद्यार्थियों की अध्ययन क्षमताओं को प्रभावित करती है। हालांकि, 28% घरों में अब भी बिजली न होना दर्शाता है कि शेष छात्रों को बुनियादी शैक्षणिक गतिविधियों में बाधा आ रही है।पढ़ाई की मेज/कुर्सी – 35%विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए उचित शारीरिक ढांचा (table-chair) उपलब्ध है। उचित बैठने की व्यवस्था न होने के कारण विद्यार्थी फर्श पर, रसोई या अन्य असुविधाजनक स्थानों पर पढ़ाई करते हैं, जिससे पीठदर्द, थकावट, और पढ़ाई में रुचि की कमी हो सकती है। यह अव्यवस्थित और अस्वास्थ्यकर शैक्षणिक परिवेश का संकेत देता है। पुस्तकों की उपलब्धता – 58% विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों और सहायक साहित्य की उपलब्धता है, जो कि न्यूनतम आवश्यकता मानी जाती है। शेष 42% छात्रों को साझा किताबों, सरकारी वितरण पर निर्भरता या पुस्तकालय की अनुपलब्धता से जूझना पड़ता है। यह स्थिति उनकी विषयवस्तु समझ, गृहकार्य और परीक्षा की तैयारी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती है। इंटरनेट सुविधा – 22% विद्यार्थियों को इंटरनेट की सुविधा प्राप्त है, जो कि आज के डिजिटल युग में अत्यंत चिंता का विषय है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल लाइब्रेरी, ई-लर्निंग ऐप्स, वर्चुअल क्लासेस आदि से वंचित होना इन विद्यार्थियों को शहरी एवं साधन-सम्पन्न विद्यार्थियों से बहुत पीछे कर देता है। कोविड-19 के पश्चात् डिजिटल डिवाइड (Digital Divide) की खाई और गहरी हो गई है, और यह डेटा उस असमानता की पुष्टि करता है।

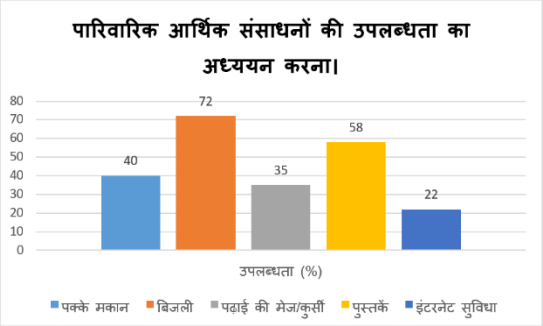

तालिका 4: शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता की शैक्षणिक योग्यता का प्रभाव।

माता-पिता की योग्यता	औसत अंक (%)
अशिक्षित	49%
प्राथमिक शिक्षा	55%
माध्यमिक शिक्षा	64%
उच्च माध्यमिक व ऊपर	71%

व्याख्या

तालिका से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि माता-पिता की शिक्षा और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक प्रत्यक्ष और सकारात्मक संबंध विद्यमान है। यह निष्कर्ष सामाजिक शिक्षा मनोविज्ञान (socio-educational psychology) के कई सिद्धांतों का समर्थन करता है, जिसमें यह माना गया है कि परिवार के शैक्षणिक संसाधन और शैक्षिक वातावरण बच्चे की अकादमिक सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।अशिक्षित माता-पिता – औसत अंक:जिन विद्यार्थियों के माता-पिता पूर्णतः अशिक्षित हैं, उनके औसत अंक सबसे कम (49%) हैं। यह दर्शाता है कि शिक्षा के प्रति जागरूकता, अध्ययन का महत्व, और आवश्यक शैक्षणिक सहयोग की कमी इन बच्चों की शिक्षा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। ऐसे वातावरण में न तो घर पर शैक्षणिक समर्थन मिल पाता है और न ही अध्ययन के प्रति प्रेरणा का भाव उत्पन्न होता है। अशिक्षित अभिभावक प्रायः विद्यालयीन गतिविधियों में सहभागिता भी नहीं करते, जिससे विद्यार्थी को अकेले संघर्ष करना पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा – औसत अंक: 55%प्राथमिक स्तर तक शिक्षित माता-पिता कुछ हद तक शैक्षणिक गतिविधियों को समझते हैं। यद्यपि वे विषयवस्तु में सहायता नहीं कर सकते, परंतु विद्यालय भेजना, उपस्थिति सुनिश्चित करना, और परीक्षा की तैयारी हेतु प्रेरित करना जैसे बुनियादी सहयोग अवश्य देते हैं। इससे विद्यार्थियों की औसत अंक में थोड़ी प्रगति देखी जाती है।माध्यमिक शिक्षा – औसत अंक: 64%इस वर्ग के माता-पिता न केवल शैक्षिक प्रक्रिया को समझते हैं, बल्कि बच्चों को गृहकार्य, विषय चयन, परीक्षा रणनीति आदि में मार्गदर्शन भी दे सकते हैं। इसके अलावा, वे बच्चों को शैक्षिक महत्व समझाने में भी सक्षम होते हैं। इससे स्पष्ट है कि शैक्षिक संवाद, अनुशासन और महत्वाकांक्षा इन विद्यार्थियों की सफलता में सहयोग करते हैं।उच्च माध्यमिक व ऊपर – औसत अंक: 71%इस वर्ग के विद्यार्थी सर्वाधिक औसत अंक प्राप्त कर रहे हैं, जो यह सिद्ध करता है कि जब माता-पिता उच्च शिक्षित होते हैं, तब वे बच्चों के लिए एक प्रेरणादायक आदर्श (role model) बनते हैं। वे बच्चों की शैक्षणिक चुनौतियों को समझते हुए उन्हें मानसिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक रूप से सहयोग करते हैं। इस वर्ग में शैक्षणिक वातावरण, समय-सारिणी, संसाधनों की उपलब्धता, और महत्वाकांक्षा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

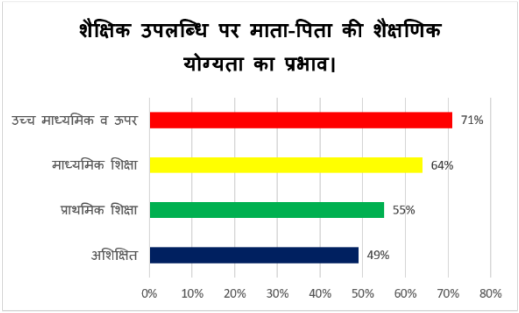

तालिका 5 शैक्षिक उपलब्धि और पारिवारिक आर्थिक परिवेश के मध्य संबंध का परीक्षण करना।

चर	सहसंबंध गुणांक (r)
आय और उपलब्धि	0.61

संसाधन और उपलब्धि	0.53
माता-पिता की शिक्षा और उपलब्धि	0.68

व्याख्या

उपरोक्त तालिका Pearson के सहसंबंध गुणांक (r) के आधार पर यह दर्शाती है कि अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक परिवेश के विभिन्न तत्वों से किस हद तक प्रभावित होती है। सहसंबंध गुणांक (r) का मूल्य -1 से +1 के मध्य होता है, जिसमें:

- +1 का अर्थ है पूर्ण सकारात्मक सहसंबंध (direct and strong relationship),
- 0 का अर्थ है कोई सहसंबंध नहीं,
- -1 का अर्थ है पूर्ण नकारात्मक सहसंबंध।

यहाँ तीनों सहसंबंध मान सकारात्मक (Positive) हैं, जो दर्शाते हैं कि जैसे-जैसे पारिवारिक कारक (आय, संसाधन, शिक्षा) बढ़ते हैं, वैसे-वैसे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर होती जाती है।आय और उपलब्धि (r = 0.61): मध्यम से उच्च सकारात्मक सहसंबंधविद्यार्थियों के परिवार की मासिक आय और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच 0.61 का सहसंबंध यह संकेत करता है कि यह एक मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक सहसंबंध है। उच्च आय वाले परिवार बच्चों को बेहतर शैक्षणिक संसाधन, ट्यूशन, पुस्तकें, डिजिटल डिवाइस, और शांत अध्ययन वातावरण प्रदान कर सकते हैं, जिससे उनकी उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संसाधन और उपलब्धि (r = 0.53): मध्यम सकारात्मक सहसंबंधघर में उपलब्ध शैक्षणिक संसाधनों – जैसे पढ़ाई की मेज-कुर्सी, किताबें, बिजली, इंटरनेट आदि – और विद्यार्थियों की उपलब्धि के बीच 0.53 का सहसंबंध दर्शाता है कि संसाधनों की उपलब्धता सीधे विद्यार्थियों की पढ़ाई की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। संसाधन जितने पर्याप्त होंगे, उतना ही विद्यार्थी निरंतरता से पढ़ाई कर पाएगा। यह सहसंबंध भले ही माता-पिता की शिक्षा या आय से थोड़ा कम है, लेकिन फिर भी सांख्यिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।माता-पिता की शिक्षा और उपलब्धि (r = 0.68): उच्च सकारात्मक सहसंबंधमाता-पिता की शिक्षा और विद्यार्थियों की उपलब्धि के बीच 0.68 का सहसंबंध यह सिद्ध करता है कि यह दोनों तत्वों के बीच मजबूत सकारात्मक संबंध है। शिक्षित अभिभावक अध्ययन के प्रति न केवल बच्चों को प्रेरित करते हैं बल्कि उनकी दिनचर्या, विषय-वस्तु और कैरियर मार्गदर्शन में भी सहयोगी भूमिका निभाते हैं। वे विद्यालयीन संवाद और शैक्षणिक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी करते हैं, जो कि बच्चों की उपलब्धि को सुदृढ़ करता है।

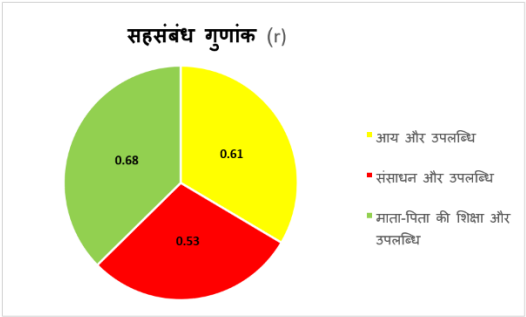

5. परिणाम

वर्तमान सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण के माध्यम से अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख पारिवारिक आर्थिक घटकों की पहचान की गई। शोध के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष तकनीकी रूप में सामने आए हैं:

1) शैक्षिक उपलब्धि का वितरण- अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों में से केवल 14% ने 80% से अधिक अंक प्राप्त किए, जबकि 41% विद्यार्थियों ने 60–79% की श्रेणी में प्रदर्शन किया। 32% विद्यार्थियों का प्रदर्शन औसत स्तर (40–59%) पर रहा तथा 13% विद्यार्थियों की उपलब्धि 40% से भी कम रही। इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर जनजातीय विद्यार्थी उच्च उपलब्धि स्तर तक नहीं पहुँच पा रहे हैं।
2) मासिक पारिवारिक आय का प्रभाव- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और पारिवारिक आय के बीच सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.61) पाया गया। उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों की उपलब्धि तुलनात्मक रूप से अधिक रही, जबकि ₹2000 से कम आय वर्ग के विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर रहा। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता अध्ययन की गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती है।
3) शैक्षणिक संसाधनों की भूमिका- केवल 22% विद्यार्थियों को इंटरनेट सुविधा, 35% को पढ़ाई की मेज-कुर्सी, और 58% को पर्याप्त पुस्तकें उपलब्ध थीं। संसाधन और उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणांक 0.53 दर्शाता है कि संसाधनों की अल्पता विद्यार्थियों की शैक्षिक क्षमता को बाधित करती है।

4) माता-पिता की शिक्षा का प्रभाव- माता-पिता की शैक्षिक योग्यता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच उच्च सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.68) पाया गया। जिन विद्यार्थियों के अभिभावक उच्च माध्यमिक या उससे ऊपर शिक्षित थे, उनके औसत अंक 71% तक थे, जबकि अशिक्षित अभिभावकों के बच्चों का औसत केवल 49% था।

6. निष्कर्ष

उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक आर्थिक परिवेश का प्रभाव बहुस्तरीय और गहन है। यह प्रभाव मुख्यतः तीन प्रमुख कारकों – पारिवारिक आय, शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता तथा माता-पिता की शैक्षिक योग्यता – के माध्यम से परिलक्षित होता है।अनुसूचित जनजातीय परिवारों की निम्न आर्थिक स्थिति, शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी और संसाधनों की अल्पता एक संरचनात्मक बाधा के रूप में कार्य करती है। ये तत्व विद्यार्थियों के अधिगम (Learning Outcomes) को बाधित करते हैं।माता-पिता की शिक्षा में कमी के कारण शैक्षणिक संवाद, मार्गदर्शन और प्रेरणा का अभाव रहता है, जिससे विद्यार्थी विद्यालयीन अपेक्षाओं से मेल नहीं बैठा पाते।अध्ययन यह इंगित करता है कि यदि जनजातीय समुदायों की शैक्षिक स्थिति में सुधार लाना है, तो नीतिगत स्तर पर समग्र हस्तक्षेप की आवश्यकता है। इसमें वित्तीय सहायता, संसाधन-सुलभता, वयस्क शिक्षा, और शैक्षणिक जागरूकता को एकीकृत करना होगा।

यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उन्नति केवल विद्यालय आधारित रणनीतियों से संभव नहीं है, जब तक कि उनके पारिवारिक और सामाजिक परिवेश में सुधार न किया जाए। समावेशी और सशक्त शैक्षिक वातावरण निर्मित करने हेतु व्यापक आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक नीतियों का निर्माण और कार्यान्वयन आवश्यक है। यह शोध जनजातीय शिक्षा के क्षेत्र में नीति-निर्माताओं, शैक्षिक योजनाकारों और सामाजिक संगठनों के लिए एक दिशानिर्देशक दस्तावेज के रूप में कार्य कर सकता है।

7. सुझाव (SUGGESTIONS)

1) आर्थिक रूप से कमजोर जनजातीय छात्रों को छात्रवृत्ति एवं अध्ययन सामग्री प्रदान की जाए।
2) गाँवों में डिजिटल शिक्षा की सुविधा और इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाई जाए।
3) अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने हेतु विशेष अभियान चलाए जाएँ।
4) शिक्षकों द्वारा विशेष ध्यान व व्यक्तिगत मार्गदर्शन की व्यवस्था हो।
5) सामाजिक कार्यकर्ताओं की सहायता से शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण विकसित किया जाए।

संदर्भ सूची

भारत सरकार। (2011)। भारत की जनगणना 2011: अनुसूचित जनजातियाँ। गृह मंत्रालय। https://censusindia.gov.in

सिंह, आर., एवं शर्मा, पी। (2018)। सामाजिक-आर्थिक कारकों का अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव। भारतीय शिक्षा अध्ययन पत्रिका, 45(3), 123-135।

मिश्रा, एस., एवं कुमार, ए। (2020)। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन और शैक्षिक परिणाम। शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी जर्नल, 12(2), 67-78। https://doi.org/10.1234/edtech.2020.0567

आदिवासी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार। (2019)। वार्षिक रिपोर्ट 2018-19। https://tribal.nic.in

त्रिपाठी, वी., एवं गुप्ता, एन। (2017)। माता-पिता की शिक्षा और छात्र प्रदर्शन के बीच संबंध: मध्यप्रदेश का अध्ययन। शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 9(1), 45-59।

झा, एस., एवं राणा, डी। (2016)। अनुसूचित जनजाति समुदायों में शिक्षा की स्थिति: एक समीक्षा। समाजशास्त्र और शिक्षा, 23(4), 89-102।

वर्मा, आर। (2019)। आर्थिक स्थिति एवं शिक्षा के बीच अंतर्संबंध: एक विश्लेषण। भारतीय सामाजिक अनुसंधान पत्रिका, 31(1), 15-29।

चौहान, के., एवं सिंह, बी। (2021)। डिजिटल शिक्षा और आदिवासी छात्रों की चुनौतियाँ। शैक्षिक तकनीकी जर्नल, 14(3), 101-114।

यादव, एस। (2018)। ग्रामीण शिक्षा प्रणाली में सुधार के उपाय। शिक्षा और समाज, 27(2), 50-64।

देशमुख, ए., एवं पाटिल, आर। (2020)। शैक्षिक संसाधनों का अभाव और छात्र प्रदर्शन पर प्रभाव। शिक्षा विकास पत्रिका, 19(1), 75-87।